होते हुए भी जर्मनी की अर्थव्यवस्था पर कुंडली मारकर बैठे हुए थे। हिटलर ने यहुदियों की आलोचना की और बेरोजगारों को अपने स्वयं सेवक संघ में भर्ती कर दिया। यह स्वयं सेवकों की फौज कालान्तर में उसकी सफलता में मील का पत्थर साबित हुआ। सच पुछा जाय तो हिटलर के उदय के लिए आर्थिक संकट ही जिम्मेदार थी विडम्बना तो यह है कि आर्थिक शक्ति धीरे-धीरे सुधरने लगी थी तभी इस नाजीवाद नामक राक्षस का उदय हुआ। कुछ दिन और बीत जाता तो इतिहास हिटलर को नहीं देख पाता लेकिन ऐसा नहीं हुआ हिटलर ने जर्मन जनता को न केवल एक राक्षस का दर्शन दिया बल्कि सम्पन्न होने का स्वप्न दिखाकर भी अपने अधिनायकवादी मार्ग को सशस्त्र कर दिया।

iii गणतंत्र की असफलता - हिटलर के उदय का एक महत्वपूर्ण कारण जर्मनी में गणतंत्र की असफलता को भी माना जाता है। इसमें आम जर्मनों पर उस गणतंत्र को थोप दिया गया था जो जर्मन जातियों की परम्परा से मेल नहीं खाता था इस गणतंत्र में अनेक पार्टियों का जनमत था जिसके चलते संसद में अनुशासन का पूर्णतः अभाव था वहाँ की जनता की नजर में यह गणतंत्र वर्साय की संधि को स्वीकार करने वाला एक अपमान था। उपर से अचानक मुद्रास्फीति से सफलतापूर्वक निबटने में उसकी असफलता ने उसे जर्मन जनता की नजर में गिरा दिया था वर्साय की सन्धि के द्वारा जर्मनी के कई प्रदेश एवं उपनिवेश को छीन लिया गया था। इस गणतंत्र ने पुनः उसे प्राप्त करने में अपनी लचारी दिखाई अतः जर्मन जनता के लिए गणतंत्र एक उपहास बनकर रह गया था। उसे तो इस असफलता से उबरने के लिए बिस्मार्क जैसे महान व्यक्ति की तलाश थी हिटलर को इस परम्परा के निर्वाह के लिए जनता ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। सच बात तो यह है कि गणतंत्र की असफलता ने ही अधिनायकवाद का मार्ग ~~प्रशस्त~~ खोल दिया।

iv साम्यवादियों एवं मार्क्सवादियों का भय - युद्धोत्तर एवं आर्थिक संकट से ग्रस्त जर्मनी में साम्यवादियों एवं मार्क्सवादियों की बाढ़ आ गयी थी। ये लोग रूस से प्रेरित थे और जर्मनी में सर्वहारा अधिनायकवाद की स्थापना करना चाहते थे। 1930 के

के चुनाव में साम्यवादियों ने ७७ स्थान प्राप्त किये थे हिटलर ने जर्मनवासियों को साम्यवादियों का भय दिखाया और कहा कि जर्मनी में साम्यवादी सत्ता स्थापित होने पर वह रूस के अधीन हो जायेगा। साथ ही साथ जर्मनी की व्यक्तिगत व संपत्ति समाप्त हो जाएगी, उसके इस प्रचार से पूँजीपति जो हिटलर के विरोधी थे वे भी इसके समर्थक हो गये। इन पूँजीपतियों ने उसकी पार्टी को इतना मजबुत बना दिया कि आगे चलकर उसने महत्वपूर्ण कार्यवाईयों द्वारा पहले तो साम्यवादी पार्टीयों का जनाजा बाहर निकाल दिया और बाद में गणतंत्र सरकार की धज्जी उड़ाकर अपने अधिनायकवाद की स्थापना कर दी।

V हिटलर का व्यक्तित्व - हिटलर का अपना प्रभावशाली व्यक्तित्व और उत्साहपूर्ण वक्तव्य भी उसके उत्कर्ष का एक महत्व पूर्ण कारण है। हिटलर एक सफल मनोवैज्ञानिक था अपने भाषणों में बेरोजगार युवकों को आकृष्ट करने के लिए आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत करता था। हिटलर प्रचार के महत्व को समझता था अपने भाषणों में वह वर्साय की सन्धि को लेकर उन तमाम बातों की आलोचना किया करता था जो जर्मन जनता के लिए अपमानजनक थी। अपने भाषणों से हिटलर ने जर्मन जनता के दिमाग में वर्साय की सन्धि के प्रति इतनी घृणा उत्पन्न कर दी कि जर्मन जनता के मुख से एक ही बातें निकलने लगी कि हम हथियार उठायेंगे। उसकी बातों में जादू था जो जर्मन जनता के सिर चढ़कर बोलता था।

VI दार्शनिकों का प्रभाव - जर्मन के दार्शनिकों ने भी ऐसे दर्शन दिये थे जो हिटलर के उत्थान के लिए पोषक तत्व का काम कर रहे थे जैसे नित्शे नामक दार्शनिक ने महानुभाव का concept दिया एक दार्शनिक ने कहा कि युद्ध मनुष्य का सर्वोच्च अनुभव है इन सब बातों को हिटलर ने जर्मनी जाति के लोगों के समक्ष प्रतिपादित किया और जर्मनी के प्रजातांत्रिक सरकार को समाप्त कर हिटलर शाही को स्थापित किया।

VII जर्मन जाति की ऊँची भावना - अंत में हिटलर के उत्थान का एक कारण यह भी था कि जर्मन जाति की यह परम्परा थी कि वे लोग वीर स्वभाव के होते थे। और किसी भी वीर

व्यक्ति को अपना नायक समझने में गौरव समझते थे। जर्मन जाति के लोगों का काम आज्ञापालन, त्याग और कर्तव्य तक ही सीमित होता था। ये तो विल्सन का प्रभाव था कि जर्मनी में गणतंत्र की स्थापना हुई थी। अन्यथा ये लोग सैनिक भावना में ही जीने और मरने की तमन्ना रखते थे।

<u>जीवनी</u> — हिटलर का जन्म एक साधारण परिवार में 1889 ई० में हुआ था जब 12 वर्ष का था तभी इसके माता पिता की मृत्यु हो गया था। पेंटर के रूप में अपना आरम्भिक जीवन शुरू किया। 1914 में युद्ध के समय सेना में भर्ती होकर जर्मन की ओर से लड़ा। बाद में जर्मनी की हार ने उसे काफी उत्तेजित किया और अपने भाग्य को आजमाने के लिए अपने समर्थकों का एक दल बनाया 1923 में गणतंत्रिक सरकार के विरुद्ध एक असफल विद्रोह किया लेकिन उसे बंदी बना लिया गया तथा 1925 में जेल से रिहा हुआ। इसी बीच उसने अपने प्रसिद्ध पुस्तक मीन कैम्प की रचना की। इस में उसने जर्मन लोगों के बीच अपने सभी विचारों को रखा। जैसे वर्साय की सन्धि की समाप्ति, जर्मन तथा जर्मन जातियों के सभी व्यक्तियों का एकीकरण। साम्यवादियों को समाप्त करना तथा जर्मनी में तृतीय साम्राज्य की स्थापना करना। अपनी पुस्तक में उसने राष्ट्र संघ को एक बेकार तंत्र की संज्ञा दी। 932 के आर्थिक संकट से व्याकुल जर्मनी ने हिटलर की बातों को पहली बार आशातीत सफलता मिली। 1933 में हिंडेनबर्ग ने उसे चांसलर बनने के लिए आमंत्रित किया। म्यूनिक का एक साधारण पेंटर चांसलर बनने के बाद संसद में अपने विरोधियों को समाप्त करने के लिए उसने चतुराई पूर्ण कार्य द्वारा संसद भवन में आग लगवा दिया और इसका दोष साम्यवादियों पर मढ़ दिया। 1933 के चुनाव में साम्यवादियों का लगभग पूर्णतः सफाया होगा। 1934 में हिंडेनबर्ग के मरने के बाद चांसलर और राष्ट्रपति का पद मिलाकर एक कर दिया। संसद को सदा के लिए भंग कर दिया और जर्मनी का नाम बदल कर तृतीय गणतंत्र कर दिया इस तरह से वह जर्मनी का तानाशाह बन गया।

लेकिन प्रश्न उठता है कि इस वक्त विरोधी शक्तियाँ क्या कर रही थी उन्होंने हिटलर को रोकने का प्रयास क्यों नहीं किया सच बात तो यह है कि सोवियत संघ के तानाशाही शासन से इंग्लैण्ड, फ्रांस इत्यादि देश इतने भयभीत थे कि इन लोगों ने हिटलर को साम्यवादियों का विनाशक समझ कर इसके उत्थान के प्रति तुष्टिकरण की नीति अपनाई

The end